

शुभ कल्पना गीत

स्वर्ग होगा इस धरा पर ऐसी अपनी कल्पना .
शुभ ही होगा इस धरा पर ऐसी अपनी कल्पना ..

वर्षों से अतृप्त जीवन अर्द्ध जागृत ही रहा .
जीवन यह जागृत ही होगा ऐसी अपनी योजना ..
शुभ ----

प्रिय, हित और लाभ तक सीमित अब तक हम रहे .
न्याय, धर्म, सत्य पथ होगा ऐसी अपनी योजना ..
शुभ ----

आस्तिक्य में सहअस्तिक्यता से पूरकता का कर निर्वाह .
लक्ष्य स्वराज्य ही होगा ऐसी अपनी योजना ..
शुभ ----

पदी ५.

* जून १९८४ *

शुभ संकेत गीत

शुभ संकेत जीवन विद्या का आगे बढ़ते जाना है .
आगे बढ़ते जाना हमको आगे बढ़ते जाना है ..

गुरु-शिष्य का जाता यह तो पिता-पुत्र सम्बन्ध जैसा .
शुभ प्रयोजन में शिक्षा का हमको बोध कराना है ..
शुभ ----

शिक्षा और संस्कार से ही व्यक्ति प्रमाणित होता है .
शुभ शिक्षा-संस्कार सुलभ हो पथ ऐसा अपनाना है ..

शुभ ----

बच्चे ही तो आगे चलकर आविष्य निर्माता बनते .
शुभ परम्परा बहे निरन्तर इनका उत्साह बढ़ाना है ..
शुभ ----

पदी ५.

* जून १९८४ *

उत्सव गीत

जन-जन होंगे प्रसन्न सभी उत्सव मनाएंगे,
परिवार में होगा न्याय शान्तिमय उत्सव मनाएंगे ..

ग्रामों में मानव शिक्षा का सुअस्तर सबको होगा,
व्यवसाय होगा मानवीय, स्वावलम्बन होगा ..
(धर्म में होगा समाधान), सन्तोषमय उत्सव मनाएंगे ..
जन ---

ग्रामों के सहअस्तित्व से सुन्दर राष्ट्र बनेगा,
सुख-समृद्धि से ओत-प्रोत स्वर्णिम राष्ट्र बनेगा ..
सत्य होगा प्रामाणिक, आनन्दमय उत्सव मनाएंगे ..
जन ---

राष्ट्र मिलकर विष्वक्कम्पना को साकार करेंगे,
विश्व बंधेगा स्नेहसूत्र में स्नेहित सभी रहेंगे ..
स्वराज्य होगा अविभक्त, मंगलमय उत्सव मनाएंगे ..
जन ---

पदो५.

* दिन १९८४ *

मंगल गीत

जन्म लिया जिस पर हमने उस जन्म भूमि पर मंगल हो,
कार्य करें हम मिलकर शुभ के कर्मभूमि पर मंगल हो ..
माँ की भगता में लक्ष्य हो जीवन को जागृत करना,
शिशु पोषण-संरक्षण को तन-मन-धन से पूरा करना ..
आचरण में हो उदारता, मातृभूमि पर मंगल हो ..
कार्य ---

पथ प्रदर्शकों के प्रति कृतज्ञता का भाव रहे,
जीवन-विद्या स्रोतों के प्रति मन में श्रद्धा का भाव रहे ..
आचरण में हो मानवता, पुण्यभूमि पर मंगल हो ..
कार्य --- (हो मानवता, आचरण में)

विशेष से हम सहज होकर प्रेम मुल्य अभिव्यक्त करें,
जीवन-रूप में सब समान हैं, सर्व समक्ष यह व्यक्त करें ..
जागृत हों सब मानव जीवन, विश्वभूमि पर मंगल हो ..
कार्य ---

पदो५.

* दिन १९८४ *

उत्साह गीत

- मेरे साथ-चलो,
सब साथ-चलो,
प्रसन्नता, उत्साह के साथ ।
स्वानुशासन से,
स्वराज्य तक,
बढ़ो सभी उत्साह के साथ ॥
- * सबको ही जागृत होना है,
इस बार अवश्य होना है,
लेना संकल्प,
है इह संकल्प,
बोध पूर्वक उत्साह के साथ ।
मेरे - - -
- * चाहे किसी देश का वासी हो,
कोई भी भाषा-भाषी हो,
विनम्र (पूर्वक) लेकर,
प्रेम पूर्वक,
चलना है सबको अपने साथ ।
मेरे - - -
- * सांग सभी को बेठाकर,
जीवन विद्या को समझाकर,
विश्वास से,
अपनत्व से,
स्वराज्य हेतु चलना है साथ
मेरे - - -

पदीप.

* अगस्त १९४४ *

जीवन-गीत

- मैं जीवन हूँ तुम जीवन हो जीवन रूप में सब समान हैं,
हर जीवन को है जागृत होना जागृत जीवन में समाधान है ॥
- * वर्षों से सुख हेतु मानव क्या-क्या करता आया,
निय, हित और लाभ में ही बस सुख को ढूँढ़ता आया,
न्याय, धर्म और सत्य जिसमें, उस जीवन में सुख विद्यमान है,
मैं - - -
- * न्याय को हमने बाहर ढूँढ़ा परिवार में मिलता न्याय,
व्यवहार में ही जब मानवता को सबको मिलता न्याय ॥
न्याय से जीवन में शान्ति आये, परिवार ही इसका शुभ स्थान है,
मैं - - -
- * धर्म की भाषा-परिभाषा में उलझे युगों-युगों से,
धर्म कहाँ है इसका उत्तर खोजा युगों-युगों से ॥
व्यवस्था में ही धर्म समाया, स्वराज्य में यह समाधान है,
मैं - - -
- * सत्य सुनो और सत्य ही बोलो कहते हम सबको हैं,
आचरण में अपने क्या है, दिखता वह सबको है,
आचरण में ही प्रामाणिकता, सत्य का यह शुभ सम्मान है,
मैं - - -

पदीप.

* अगस्त १९४४ *

लक्ष्य गीत

आओ तुम गीत सुनाओ
सब नया संगीत सुनाओ ..

* देखो कितना सुख ही सुख है (समाया)
अस्तित्व में सह अस्तित्व ही है (समाया)
सह अस्तित्व में ही सुख की बात समायी,
हर व्यक्ति में सुख की आस समायी:
आओ तुमको सुख की आस बंधाओ ..
जीवन विद्या से विश्वसल बंधाओ ..

* सब कुछ अपने पाल है पहले से ही.
देह मिली यह श्रेष्ठ पहले से ही.
कर्मोन्निर्वाह कर्म स्वस्थ करने को,
ज्ञानोन्निर्वाह है समझ पूर्ण करने को ..
मानव देह है कितनी श्रेष्ठ बताओ.
जीवन होगा जायत इसमें बताओ ..

* हम क्या हैं, और कौन, क्यों हम आये.
क्या करना है, क्यों मानव देह यह पाये ..
में जीवन, तुम जीवन व्यक्ति सभी.
जीवन जायत हो कुछ करें सभी ..
लक्ष्य हमारा क्या स्पष्ट बताओ ..
स्वानुशासन, स्वराज्य तक ले जाओ ..

पदी ५

* अगस्त १९८४ *

जीवन रूप गीत

जीवन क्या है आओ इसे पहचानें हम,
चेतन्य शक्ति का पुञ्ज इसे पहचानें हम ..

* जीवन में होता है मन, मन में होती है आशा.
पमन-आस्वादन क्रिया होती मन करता जब आशा ..
आशा अपनी शुभ ही हो यह मानें हम.
चेतन्य - - -

* दृष्टि होती जीवन में, वृत्ति में होते हैं विचार
तुलन-विश्लेषण क्रिया होती, विस्तृत होते हैं विचार ..
विचार करेंगे शुद्ध यही अब जानें हम,
चेतन्य - - -

* चिन्त होता जो जीवन में उसमें होती है इच्छा,
चिन्तन-चित्रण क्रिया होती विशुद्ध होती इच्छा ..
इच्छा हो चिन्तन की यह पहचानें हम,
चेतन्य - - -

* बुद्धि होती जीवन में जो होता उसमें संकल्प है,
बोध-संकल्प की क्रिया में लेना हमको संकल्प है,
बोध होता सत्य का ही यह जानें हम.
चेतन्य - - -

* जीवन में जो आत्मा है उसमें होता है अनुभव,
प्रामाणिकता-स्वानुशासन क्रिया का होता है अनुभव ..
दूसों क्रियारं अभिभाज्य यह पहचानें हम,
चेतन्य - - -

पदी ५

* अगस्त १९८४ *

विश्वास गीत

हम गाते हैं एक गीत नया,
सब मिलकर साथ- हाँ साथ-साथ ।

* विश्वास हो गया हमको है.
कोई ऐसी भी विद्या है.
जो दुःख-पीड़ा में देती साथ.
निरन्तरता पुण्य में रहती साथ.
हम ---

* हम कर्म करेंगे पूरे सही.
दोढ़े जो हमने अधूरे कभी..
न्याय, धर्म, सत्य के साथ.
शान्ति, सन्तोष, आनन्द के साथ..
हम ---

* है जीवन-विद्या ही ऐसी.
स्पष्ट सभी बातें, कैसी.
प्रामाणिक है प्रमाण के साथ.
रहती जीवन के साथ-साथ.
यह प्रकृता में साथ-साथ.
है सम्बन्धों में साथ-साथ.
मृत्यों के साथ-मानव के साथ.
है मान्यरण में साथ-साथ.

स्वानुशासन में स्वराज्य में,
जाग्रत जीवन के साथ-साथ.
समृद्धि में, सह भोक्तृत्व में,
सम्प्रक्त अस्तित्व में साथ-साथ.।

पदीप.

अगस्त १९४६

हम वन्दना करें

हम वन्दना करें

हम धर्म प्रदर्शकों की
उन शक्तियों की वी

हम वन्दना करें - २

जिनसे है मार्गदर्शन

उनके कृतज्ञ है हम

हम वन्दना करें - २

कामना

भूमि ही स्वर्ग होगी

मनुष्य ही तो देवता

धर्म सम्पन्न हो जाइया

जितय संगत होगा

हम कामना करें - २

संकल्प

मेरी मांग है,

आधुनिक व्यवहार करेंगा

धर्म पूर्ण विचार करेंगा

सत्य को अनुभव करेंगा

धीरता वीरता उदारतापूर्वक

व्यवस्था को साकार करेंगा

अथ है। संगत है। कल्याण है।

~~~~~

आदरणीय बाबा जी,

निरुप उत्सव कासना

यहाँ सब कुशलतापूर्वक चल रहा है। मामा जी, 20 सितंबर 18 देशपाल के साथ समुक्त कार्यक्रम चल रहा है। 20 सितंबर जी यहाँ 19 तक रहेगे।

साथ जी ने दिशम्बर तक की दिने शिविरों के लिए दी है यहाँ आशुत 6 से 12 तक शिविर निश्चित हो गया है। स्कूल भी अच्छी तरह चल रहा है। समाधान के लिए आप 20-20 की प्रार्थना है।

बाबा जी पहिले पत्र में मैंने आपको जिन दिनों को निमन्त्रण दिया। उसमें कुछ बदलाव है।

साथ जी 18 20 सितंबर को रात्र भिगा है कि आप

24 सितम्बर तक आशुत पहुँचे। 10 तक ही पूर्ण आयना रिजर्वेशन हो जाएगा।

25 से 30 तक। ~~अवकाश~~

अर्थान

25 सितम्बर से 3 अक्टूबर तक शिविर का निश्चय हुआ है।

देशपाल की जीन अच्छी है। असौक दिवसी गया है। जल्दी ही वापस आयेगा। मामा जी स्कूल की दभारन बनाने में लगे हैं। आशा है अक्टूबर में आपके आने से पूर्व आशा बन कर तैयार हो जाएंगे।

20 सितंबर भी ~~कुछ~~ विचारण में कुछ ~~का~~ कुछ पढ़ाने रहने है। इस पत्रक के पहिले विद्यार्थ्य भी बन्दना है। कंसी बनी। और क्या होगा चाहिए। निदेशित करें।

श्रीधर शुभ

आपका शिवा

P.S. पलवार में दोपहर के बाद 18 वरदा की

## वन्दना

हम वन्दना करें

हम वन्दना करें

उन पथ प्रदर्शकों की

उन सत्यवैशिष्ट्यों की

हम वन्दना करें-२

जिनसे है मार्गदर्शन

उनके कृतज्ञ है हम

हम वन्दना करें-२

## कामना

भूमि ही स्वर्ग होगी

मनुष्य होगी देवता

धर्म साधन हो जायगा

नित्य संगत होगा

हम कामना करें-२

## संकल्प

मैं मानव,

न्यायपूर्ण व्यवहार करूँगा

धर्मपूर्ण विचार करूँगा

सत्य को अनुभव करूँगा

धीरता वीरता उदारतापूर्वक

व्यवस्था को साकार करूँगा

जय हो। संगत हो। कल्याण हो।

## जीवन-काव्य

"मनुज से ही मनुजना संभाव्य है"  
मनुजना ही मनुज कुल का काव्य है"

मनुज को रख केन्द्र में चिंतन कर  
केन्द्र का क्या भूल है मंचाल कर  
क्या हुआ, क्या होना पाया आज तक  
खेवजी ले दाख में अंकन कर।

जब सही चिंतन करूंगा तब का  
जब प्रभावित अर्थ होकर कथा का  
जान होने पर कि क्या है सत्यता  
प्रम रहै जा शेष न रहै रस का

जो प्रभावित करना पाऊँ न करूँ  
आवेष्टा में आ आना के न करूँ  
सुर की निरन्तर साध सख में कामना  
होती यही कलीभूत में सबसे करूँ।

जो प्रभावित है वही तो आप है  
आस्तिव में तो आपना ही व्याप है  
विकासक्रम में यह हुआ अध्ययन सुलभ  
सृष्टि-कथन मनुज भर को धारण है।

धर्म इसके खेवजी जो कूँजालि  
कलशाला जालिन मेरी उनके प्रानि  
जिनके सही चिंतन-मनन-संचाल से  
ध्यायति के झोल सारे आनजी निन

है तबना होली नही तो किस तरह  
विकास का क्रम जान होला प्रसन्न हो  
मान-विचारों पर हुआ चिंतन सत्तह सीतल  
जल रेशजी ले साध आई दर सुलह

जर्मिदा उदयाम धाली की जोड़ में  
 लख-दशलि के निरनर बोटा में  
 एकल निनकी डेवली से एकरी है साधाल  
 इन श्री नानारोम अहाराल की अचल  
 करना रूंद पल-पल यही है साधलि।  
 साधलि ही कन सगे लिन वन्दना।  
 साधलि से बल मुने इलनामिल  
 समान बल अंकुरिन यैसा बिल  
 योज भयना की भटक हर ओर है  
 समुपन निरमें हर दिशा हर हर है।

इस भनीसी को मेरा पहला नाम  
 सोच के उनावल बिले इनसे पुअन  
 अमानल के मेर काले बाट कर  
 भुलना से मर दियो अन्तःकरण।

हैं उन्ही की सोच को दे शहर अंग  
 काव्य के कुछ बंद बंटा आल लिखने  
 भुन-भुन की सवाल है वगैरे  
 मैं चला हूँ रमना में और रमने।

मरपदश दशलि के मुनेना मुन-पुन  
 नम पुन के कप में है सन-पुन  
 सन-पुन के आन नचलें का प्रका  
 अपनी-दिशा में है चला मेरे चरण।

उपदेश इनके मान है प्रसिमान है  
 सन इनके सन है निरान है  
 काल सीमा से परे की सोज भयना  
 जुठा-जुठान काल सदा सदान है

पूर्व इनके जो मनीषी कह जाय  
सभीका के पातकनकर कह जाय  
शुद्ध जादियों गीन विचारों से बड़ीं  
नृणाकर्मक्षी लोका धारि रह जाय ।

जो आसकान आकाश में वह कह  
जो पासका आकारन, वह ही जाइ ।

हैं अनीलि सोचके बाकल सदान  
आका से कुलसा जाय मानव-बदन  
जो मनुज को मिल सका उस सोच से  
वह भकाशिल कर रहा हर आचरण ।

एक धेर चरनी बिभाजित हो जाई  
दानवीयता से बिराजित हो जाई  
पाशविकता से पराजित हो जाई ।

एक धर चरनी बिभाजित हो जाई  
मानवीयता ही तिरोहित हो जाई  
पाशविकता में मनुज कुछ बड़ है  
कुछ दानवों के पाश में आबड़ है ।

मैं मनुज हूँ वस लिए धर लिए रहा हूँ  
धनु-दानव सा आलाक्यों किल रहा हूँ  
धर धरवा मेरी आकरो है मुझे  
मनुजता मेरी पुकार है मुझे ।

हैं निरासा में मिली है लेखनी  
हैं दिशाएँ बीस, जो हैं देखनी  
इसलिए उस भाव को मैं देखता हूँ  
स्वर्ग आना दे मुझे जो, हेरता हूँ ।

समय फिर शायद मिले न यह पुनर्।  
इसलिये उर देर नो नमको पुकार।  
नमने सुनी आवाज है इसको निहारो  
ज्ञान-निर्मल-धार से मुझको निरवारो।

भरवनी की नोक पर आ बैठ जाओ  
निश्चिन्ता की धार में आ बैठ जाओ।

जो लोचं रोसा लो हो एक दधि  
विरल उभरे और उकरे जीवन-दधनि

मनुष्य की दे रहा सौंदा नमको  
हैं सुखानी ही पुकारे जांच नमको  
नम मेरे आकाश पर दमको नरनल सा  
हमने है। अनरचे कुछ बंद नमको

दूर कब तक नम स्वयं से जाओगे  
लौट कर नम खुद स्वयं में आओगे

नम नमसा वृत्त ही विरलार है  
वृत्त का विरलार ही संसार है  
साहिल ही संसार का धोआर है  
और जो आतिरिक्त है निरसार है।

मानवों में मनुष्य ही व्याप्य है  
व्याप्य है जो हर दिशा वर काव्य है

मनु से ही मनुष्य संसार है  
मनुष्य ही मनुष्य के काव्य है।

०

आशोक-शान्ति

आनन्द-निवार

२६-वीं मनी-निवार

कोरका (सुनेल)

- भिलाई -

प्रश्न है कि हमें धार के लोहा सार  
हैं दिशा की रोज में ये कलान डार  
उत्तरि न उलटते लोले नहीं जो प्रश्न है  
एक कलान की स्वभाव इनके भाग है

धुर्व के चिंतन नहीं उत्तर दिशे  
विचार-नकली की नहीं उत्तर दिशे  
साहित्य ने जो भी दिया है वह सब (वर्तित दिशा)  
कला के लालित्य ने उलटते लोले (अनित दिशा)

सोचने जो ओलने प्रारब्ध है  
प्रारब्धता से हर कोई आबू है  
हार कर बड़े हुए हैं हार कर  
थोले हर आपदा फिर उलट कर

धर विजान की सोच का परिणाम है  
आह न हुई जिससे सुबह हर शाम है  
जो रता फिर सोच में वह ही मिला  
रोपा बिचा जो बाग में वह ही गिला

के नु में ईश्वर रत्न चिंतन दिया  
रहस्य की कारा रता मंचाल दिया  
रजोरवने आदर्श का बंदन दिया  
जो सधन पीड़ा करे बँहल दिया

महत्त्व में हुआ रता फिर सोच का  
महत्त्व में कर्त्तार रता फिर सोच का  
उस सोच जो दुलनी बिचा है बल को  
और धारा का कर दिया अलुल को

इश्वर मा है ? अइश्वर है ? अज्ञान है  
नर प्रेरेर है जो बस उल्टे ही जाल है  
नर प्रेरेर को जाला कर मु रवीकार कर  
नर प्रेरेर को जाला नय कार कर

ईश्वर का वास है उपलोक में  
 पाप-पुण्य होने लगे निरलोक में  
 धृष्ट २१२१ उत्पलोक का स्थान क्या ?  
 लोक के स्थान की प्राप्ति क्या ?

उत्तर मिला परमाणु का एक नहीं  
 प्रथम कक्षा में है लायक नहीं

केन्द्र में बल रहा, चिंतन दिया  
 लक्षण सब स्थान में मंचन दिया  
 पदार्थ से ही चेतना निर्मित हुई (निर्मित हुई)  
 विज्ञान में दो चेतना गति हुई

इश्वरानक माना २१२१ आदिम है  
 आकाश में आकाश अनिरव है  
 मोर के साधन निरंतर रहने का  
 विषय के अंतर्गत निरंतर मोर का

मोरानक विकारित <sup>१३२१</sup> विज्ञान को  
 मोरानक बनाकर रहा दिया प्रमाण को

मोर में बुरा मोर में अनेकाना  
 साधनों की अनेकाना - अनेकाना  
 काम के उमाद में पादल हुआ  
 अनेकाना की मार से बाधल हुआ

धृष्ट २१२१ विज्ञान का एकक क्या ?  
 विज्ञान के उत्कर्ष का निरकर्ष क्या ?  
 उत्तर मिला पर धृष्टने का अर्थ क्या ?  
 विज्ञान का धर्म लोपा है व्यर्थ क्या ?

०

मनु ने कहा नहीं माना स्वयं को  
 मनु ने कर्त्त नहीं माना स्वयं को  
 इसलिये तो हीनता उसमें लगी है  
 हीनता में हीनता मिलकर पड़ी है

हैं पञ्चाक्षरी रहे निरुपाय हैं  
दीन हैं ये दीन हैं, अराहाय हैं -  
निरुपायाना - अराहायाना वाछानाहीं  
मनुज कुल की भी रही काँझा नाहीं

रहस्य में भक्ति सदा से मानकर  
परबरा मनुज ने दासता स्वीकारकर  
रहस्य वादी स्नेह को प्रकट करवा  
अधवादी स्नेह को नकट करवा -  
इसारेचे योगी नाहीं, योगी बनो  
मानसिकता में स्वयं योगी बनो  
कह वादी रहो वल्ले चिंतन मिले  
अतीतवादी होओले संथाल मिले

इसाले ये लो नरन मानव नरन हैं  
नरनता को नकेलने में व्यस्त हैं  
हा विचारों की उंचोरी व्याख्या  
लौहाने में श्रम मनुज का फल है

0

कुरना में भी रहे लो लोहार हैं  
वे समस्य की दूर परके योग हैं  
स्वयं में अथ भीन हैं, अथ दे रहे  
कुरना की थाप, लय में दे रहे

आनकना के केलने परिबेश में  
अथर विचारण है मनुज जाणबेश में  
अथरना में भी रहत सार हैं  
अथरना लो दानवी सुभार हैं

दानवी श्लेखार का विचार है  
दरदरप चलना हुआ आजार है

ਮਥੇ-ਰੱਖਣੇ-ਰੱਖਣ ਦੀ ਚਿੰਤਾ ਹੈ

ਮੁਥਾ-ਪੁਲੇ ਮਨ ਦੀ ਚਿੰਤਾ ਹੈ ਅਧਿਕਾਰੀ  
ਕੋਥੇ-ਕੋਥਾ ਕੀ ਮਾਨਸੀ ਨਿਰਾਸ਼ਰੀ  
ਸਾਧਾਰਨ ਕਾ ਨਾਸ਼ਰੀ ਅਤਿ ਨਿਰਾਸ਼ਰੀ  
ਕੋਥੇ-ਕੋਥੇ ਨਾ ਨਾਸ਼ਰੀ ਕੋਥੇ ਹੈ

ਕੋਥੇ-ਕੋਥੇ ਨਾਸ਼ਰੀ ਕੋਥੇ ਹੈ ਅਧਿਕਾਰੀ  
ਕੋਥੇ-ਕੋਥੇ ਨਾਸ਼ਰੀ ਕੋਥੇ ਹੈ ਅਧਿਕਾਰੀ  
ਕੋਥੇ-ਕੋਥੇ ਨਾਸ਼ਰੀ ਕੋਥੇ ਹੈ ਅਧਿਕਾਰੀ  
ਕੋਥੇ-ਕੋਥੇ ਨਾਸ਼ਰੀ ਕੋਥੇ ਹੈ ਅਧਿਕਾਰੀ

ਮੁਥਾ-ਪੁਲੇ ਮਨ ਦੀ ਚਿੰਤਾ ਹੈ, ਅਧਿਕਾਰੀ  
ਕੋਥੇ-ਕੋਥਾ ਕੀ ਮਾਨਸੀ ਨਿਰਾਸ਼ਰੀ  
ਸਾਧਾਰਨ ਕਾ ਨਾਸ਼ਰੀ ਅਤਿ ਨਿਰਾਸ਼ਰੀ  
ਕੋਥੇ-ਕੋਥੇ ਨਾ ਨਾਸ਼ਰੀ ਕੋਥੇ ਹੈ

0

ਕੋਥੇ-ਕੋਥੇ ਨਾਸ਼ਰੀ ਕੋਥੇ ਹੈ ਅਧਿਕਾਰੀ  
ਕੋਥੇ-ਕੋਥੇ ਨਾਸ਼ਰੀ ਕੋਥੇ ਹੈ ਅਧਿਕਾਰੀ  
ਕੋਥੇ-ਕੋਥੇ ਨਾਸ਼ਰੀ ਕੋਥੇ ਹੈ ਅਧਿਕਾਰੀ  
ਕੋਥੇ-ਕੋਥੇ ਨਾਸ਼ਰੀ ਕੋਥੇ ਹੈ ਅਧਿਕਾਰੀ

ਮੁਥਾ-ਪੁਲੇ ਮਨ ਦੀ ਚਿੰਤਾ ਹੈ, ਅਧਿਕਾਰੀ  
ਕੋਥੇ-ਕੋਥਾ ਕੀ ਮਾਨਸੀ ਨਿਰਾਸ਼ਰੀ  
ਸਾਧਾਰਨ ਕਾ ਨਾਸ਼ਰੀ ਅਤਿ ਨਿਰਾਸ਼ਰੀ  
ਕੋਥੇ-ਕੋਥੇ ਨਾ ਨਾਸ਼ਰੀ ਕੋਥੇ ਹੈ

92-9-25  
ਸ਼ਾਹ-ਪੁ-30

ਅਧਿਕਾਰੀ  
ਅਧਿਕਾਰੀ-ਨਿਰਾਸ਼ਰੀ  
ਨਿਰਾਸ਼ਰੀ

## जीवन-काव्य

"मनुज से ही मनुजना संग्राह्य है"  
मनुजना ही मनुज कुल का काव्य है

मनुज को मरण के द्वे में चिंतन करे  
केन्द्र का क्या भूल है मंथन करे  
क्या दुःख, क्या हीन पाया आनंदक  
खेदवनी ले हाथ में अंकन करे

जब सही चिंतन करेगा लक्ष्य का  
तब प्रभावित अर्ध होजा कथ्य का  
जान होने पर कि क्या है सत्यता  
अस रहेगा शीघ्र न रहस्य का

जो प्रभावित करने पाऊँ, न करूँ  
आवेश में आ भावना के न बहूँ  
सुर की निरंतर साध सख में कामना  
होनी परी कलीभूत में सबसे करूँ

जो प्रभावित है वही तो आप है  
अस्तिव में तो आपना ही व्याप है  
निकासक्रम में यह हुआ अध्ययन सुलभ  
सूचि-देखलि मनुज मर को मार है

धुन इसके खेदवनी को दूँ जालि  
कैलशना जागिन मेरी उतकेअलि  
जिनके सही चिंतन-मनन-संशान से  
धुवाचलितो के झोल सारे आनंदी लिन

कैलशना होनी जही तो निरंतर रह  
निकास का क्रम जान होला प्रसन्न होइ  
मन-विचारों पर हुआ चिंतन संतुष्ट सीतल  
जब रौशनी ले साध आई दर सुबह

नर्मदा उदयाम् पाली की ओर में  
 लल-दशलि के निरन्तर बोट में  
 एकल निजकी देखी से सकी है साधना  
 उन श्री नाराज अहाराजी की अर्चना  
 करना रूढ़ पल-पल यही है प्रायश्चित्त।  
 प्रायश्चित्त ही वन से के लित वन्दना।  
 प्रायश्चित्त से बल प्राप्त रहना भिला  
 समान बल अंकुरित पौधा बिल्ला  
 पान भयान की भटक हर ओर है  
 समुद्र निमेष हर दिशा हर छोड़ है

इस मनीषी को मेरा पहला मन  
 सोच के उगावला बिले इनसे पुमान  
 अज्ञानता के मेघ का ले छाट कर  
 मनुष्य से मार दियो अन्तःकरण।

हैं उन्हीं की सोच को दे शब्द अपने  
 काव्य के कुछ खंड बेंठा आल लिखने  
 भूत-मोड़न की सदान रह बरग मे  
 मैं चला हूँ रथाना में और समो-

महादश-दशलि के प्रेमना मुठा-प्रलय  
 नम प्रलय के रूप में ले सान-प्रलय  
 सान-प्रलय के आल नचलों का प्रवण  
 अपनी-दिशा में ले चला भेरे चरवा-

उपदेश इनके मान है प्रणिमान है  
 रूढ़ इनके समान है निद्रान है  
 बाल-सीमा से परे की पान भयान  
 गुण-गणित काव्य समी सदान है

धुर्वे इनके जो मनीषी कहलाए  
समीक्षा के पान बनकर बड़े और  
शुद्ध जादियों गीन विचारों से बड़ी  
नए नए क्षितिजों का प्यासे रहे और ।

जो आसका न आनंदों में नद बहा  
जो पा सका आकाश, वह ही आह ।

हैं अनीली सोच के बाकल स्थान  
आज से फुलसाए मानव-बदन  
जो मनुज को मिल सका उस सोच से  
वह भकाशिल कर रहा हर आनंद ।

एक धेर धरती बिभाजित हो गई  
दो नवीयता से बिराजित हो गई  
पाशालिकता से पराजित हो गई ।

एक धर धरती बिभाजित हो गई  
मानवीयता ही तिरोंहित हो गई  
पाशालिकता में मनुज कुछ बड़े हुए  
कुछ दानवों के पाश में आबद्ध हुए ।

मं मनुज हैं बंध लिए धर लिए रहे हैं  
धनु-दानव सा आलापों किए रहे हैं  
धर धरता मेरी आकाश है मुझे  
मनुजता मेरी पुकार है मुझे ।

हैं बिरासत में भिली हैं लेखनी  
हैं दिशाएं बौद्ध जो हैं देवनी  
इसलिए उस भाव को मैं देखता हूँ  
स्वर्ग अपना दे भूत जो, हेरता हूँ ।

समस्त चिर शाश्वद भिले न पार कुलार ।  
इसलिये उर देर ने नमको पुकार ।  
नमने सुनी आवाज है इसको निहारो  
ज्ञान-निर्मल-धार से मुझको निवारो ।

भैरवजी की ओर पर आ बैठ जाओ  
निश्चिन्ता की धार से आ धर जाओ ।

जो लिखूं रोसा लो हो <sup>आत्म</sup> एक दाहि  
बिगल उभरे और उभरे जीवन-दश्नि

भगुलना की दे रहा सौंदा नमको  
हैं नमस्सी ही पुकारे जांदा नमको  
नम मेरे आकाश पर दमको बदलना  
है मेरे है अनरचे कुछ हरे नमको

दूर कब तक नम स्वयं से जाओगे  
लौट कर नम खुद स्वयं से आओगे

नम नमसा बुता ही निरसार है  
बुता का निरसार ही संसार है  
साहित्य ही संसार का आधार है  
औं जो आतिरिक्त है निरसार है ।

"मानवों में भगुलना ही व्याप्य है  
व्याप्य है जो हर दिशा वर काव्य है"

भगुल से ही भगुलना संभाला है  
भगुलना ही भगुल कुल का काव्य है ।

०  
अशोक-शान्ति

अनुराधा-निवार  
३६-वीं मंजु निहार

कोटका (सुनेला)

- भिलाई -

## जीवन-काव्य

"मनुज से ही मनुजना संभाव्य है"  
मनुजना ही मनुज कुल का काव्य है"

मनुज को मरण केन्द्र में चिंतन करं  
केन्द्र का क्या भूल है मंचाल करं  
क्या हुआ, क्या हुआ पाया अजितक  
खेदवनी ले हाथ में अंकन करं

जब सही चिंतन करं तब लब्ध का  
तब प्रभावित अर्थ होका कथ्य का  
जान होके पर कि क्या है स्वराला  
अस देखो शीघ्र न मंदिर का

जो प्रभावित कर न पाऊं, न करूं  
आवेष्टा में आ भावना के न बहूं  
सुख की निरंतर साधन सबमें कामना  
होनी परी कलीभूल में सबसे नहूं

जो प्रभावित है वही तो आप है  
अस्तिव में तो आपना ही व्याप्त है  
लिकाप्रक्रम में यह हुआ अध्ययन सुलभ  
सूचि-दृष्टि मनुज पर को प्रारण है

एव इसके खेदवनी को बूझानि  
कृतज्ञता आपिन मेरी उनके प्रति  
जिनके सही चिंतन-मनन-संचाल से  
ध्यायति के श्रोन सारे आत्मजीवित

कृतज्ञता होनी नहीं तो निरालम है  
निकारम का नुम जाल होला उलझा है  
भल-लिच्छाओं पर हुआ चिंतन संसर्ग रीतल  
जब रौशनी ले साध आई दर उलह

नर्मदा उदयाम धाली की गोद में  
 लल-दशलि के निरनर बोट में  
 सफल निजकी देखी हो सकी है साधाल  
 इन श्री नानाराल अहाराल की अचलि  
 करना रूढ़ पल-पल यही है साधलि।  
 साधलि ही कनसके लिल कन्दना।  
 साधलि से कल मुझे रलनामिल  
 समान लल अंकुरित पौधा दिवला  
 पान भयना की महक हर ओर है  
 समुपन निरभें हर दिशा हर हरिभ है।

इस मनीषी को मेरा पहला नाम  
 सोचके उभावल बिले इनहे पुअन  
 अमानना के मेर काले बोट कर  
 मनुमान से मर दिये अन्तःकर।

हो उन्ही की सोच को दे शाहू अपने  
 काव्य के कुछ बंद बंद आल लिखने  
 भुक्त-मोडल की सदान रस बरग मे  
 में चला हूँ रमाना में और रमने।

मरपटल दशलि के प्रथमा, मुआ-प्रथम  
 नम प्रथम के रूप में हो सान-प्रथम  
 सान-प्रथम के आन नचालों का प्रथम  
 अपनी-दिशा में ले चला मेरे चारों।

उपदेश इनके मान हैं प्रसिमान है  
 सना इनके मान हैं विद्वान है  
 कालसीमा से परे की मान भयान।  
 गुण-गणित नकारण सदा सदान है

धूर्त इनके जो मनीषी कर जाए  
समीक्षा के पात बनकर बह जाए  
शुद्ध नादियां गुंजन विचारों से बड़ी  
नानाकर्तृकी लोहा प्यासे रहे जाए।

जो आसका न आंचा २०१ में बह अहा  
जो पा सका आकादेन, बह ही आहा।

हैं अनीली सोच के बाकल साधन  
आवा से फुलसा जाए मानव-बदन  
जो मजुल को मिल सका उस सोच से  
बह सका शिल कर रहा हर आचरण।

एक धेर चरनी बिभाजित हो जाई  
दो नवीयता से बिराजित हो जाई-

पाशविकता से पराजित हो जाई-

एक धेर चरनी बिभाजित हो जाई  
मानवीयता ही निरोहित हो जाई  
पाशविकता में मजुल कुछ बहू है  
कुछ दो नवीयों के पाश में आबू है

मैं मजुल हूँ बह लिए धर लिए रहा हूँ  
धनु-दानव सा जाला क्यों किय रहा हूँ  
धर चरणा मेरी आबो रे है मुझे  
मजुलता मेरी पुकार है मुझे-

हैं निरासण में मिली है लेखनी  
हैं दिशाएं शीघ्र जो हैं देखनी  
उपलिये उस आब को मैं देखता हूँ  
स्वार्थ आगना दे मुझे जो, हेरता हूँ-

समय फिर शायद मिले न यह पुनर्ग  
इसलिये उर देर जो तुमको पुकारे।  
तुमने सुनी आवाज है इसको निहारो  
ज्ञान-निर्मल-चार से मुझको निखारो।

प्रेरणा की जो क पर आ बरसाये  
निश्चलितो की चार में आ धर लाये।

जो लिखूं ऐसा लगे हो <sup>आत्म</sup> एक दर्पि  
बिम्ब उभरे और उकरे जीवन-दहनि

मनुष्य की दे रहा सौंदास तुमको  
हैं सुखानी ही पुकारे जांच तुमको  
तुम भरे आकाश पर दमको जलन सा  
हैरने है अनसुने कुछ धंद तुमको

कैर कव लक तुम स्वयं से जाओगे  
लौट कर तुम खुद स्वयं में आओगे

तुम मलमा दुता ही निरलार है  
दुता का निरलार ही संसार है  
साहित्य ही संसार का धार है  
और जो आनि रिक्त है निरलार है।

‘मानवों में मनुष्य ही व्याप्य है  
व्याप्य है जो हर दिशा पर काव्य है’

मनुष्य ही ही मनुष्य संसार है  
मनुष्य ही मनुष्य का काव्य है।

अथर्व-शास्त्र

आयु-दय-निवार

३६-वीं मनी-निहार

कोटका (सुनेला)

- भिलाई-

प्रश्न देखा है। धारा के लीला सार  
हैं दिशा की रोज में दो भला न हारे  
उत्तरि न उल्लेख रोजे नदी जो प्रश्न है  
सुरवाकांक्षी स्वप्न इनके अलग है।

पूर्व के चिंतन नदी उन्नत दिव्यो  
विचार-नकनीकी नदी उन्नत दिव्यो  
साहित्य ने जो भी दिया (वसिष्ठ दिया)  
कला के लालित्य ने उन्नत दिव्यो (अनिल दिया)

सोचने जो ओलने प्रारंभ है  
प्रारंभ काला सो हर कोई आल है  
हार कर बड़े जुड़ है हार कर  
धोले हर आपदा सिर जाल कर

थर विजाल की सोचा का परिणाम है  
आहल हुई निचले सुबह हर शाम है  
जो रता निर सोच में गह ही मिला  
सोचा बिभा जो बाला मे वह ही मिला

केन्द्र में ईश्वर रक्त चिंतन दिया  
रक्त चकी काला रता जंचा दिया  
रजोरवने आदर्शिका नंदन दिया  
जो सधन पीड़ा करे नंदन दिया

रहस्य में हुआ रता निर सोच का  
रहस्य में कल रता निर सोच का  
उस सोच जो छलनी बिभा है नंदन को  
और धारा का रता दिया अलने को

ईश्वर का है अहंकार है अज्ञान है  
नर प्रेम है जो बस उन्हें ही ज्ञान है  
नर प्रेम को ज्ञान परम स्वीकार कर  
सर्वज्ञ-पद तक पूजा ज्ञान नय कर कर

ईश्वर का वासा है उस लोक में  
पाप-पुण्य होने लगे लोकोक में  
धृष्टा दाया उस लोक का स्वाभाव था  
लोक के स्वाभाव की पाहिला बया ?

उत्तर मिला यह जानने का एक नदी  
प्रश्न कर्त्त पुर है लायक नदी -

केन्द्र में गुरु रहा, चिन्तन दिया  
प्राप्त बस विज्ञान है मंथन दिया  
यदाथि से ही चेतना निर्मल हुई (निर्मल हुई)  
विज्ञान में ये चेतना वाचिनि हुई

हृदयनक भाना दाया अद्विष्ट है  
आंकलन में आ सका अनिष्ट है  
भोग के साधन निरन्तर खोज कर  
विषय के अवयव निरन्तर भोग कर

भोगनक विकसित <sup>विज्ञान</sup> हुआ  
भोगी ~~क~~ बनकर रहा दिया <sup>विज्ञान</sup> में

भोग में बुझो ग में अनेकता  
साधनों की अन्तता - अनेकता  
काम के उन्माद में पाताल हुआ  
अनेकता की मार से धातल हुआ

धृष्ट दाया विज्ञान का एक कर्म था  
विज्ञान के उत्कर्ष का निरकर्ष था  
उत्तर मिला यह पूछने का अर्थ था  
विज्ञान का क्षम होना था है लार्थ था

भुज ने हटा नहीं माना स्वयं को  
भुज ने कर्त्त नहीं माना स्वयं को  
इसलिये तो हीनता उसमें लगी है  
हीनता में हीनता मिलकर पड़ी है -

हैं पञ्चासाली रहे बिरुपाय हैं  
 दीन हैं ये हीन हैं, अराहात हैं -  
 बिरुपायाना - अराहायाना वांछा नहीं  
 मनुज कुल की भी रही कांक्षा नहीं।

रहस्य में कलसदा से भागकर  
 परबरा मनुज ने दासता स्वीकार कर  
 रहस्य वादी स्मरण को पकड़े रहवा  
 अधिवादी स्मरण को पकड़े रहवा -

इसलिए योगी नहीं, योगी बनना  
 भानात्मिकता में स्वयं सेवगी बनना  
 एक वादी रहोरवले चिंतन मिले  
 भगीरवादी सेगले मंचाल मिले।

इसलिए जो रहस्य भागत रहस्य हैं  
 गरलता को उकेलने में लपट हैं  
 हां बिचारों की अंचोरी बाहियां  
 लोहाजे में श्रम मनुज का परत हैं -

0

करलता में भी रहे जो लोहा हैं  
 वो समथ की देर परके सेगार हैं  
 स्वयं में अथ भीन हैं, अथ दे रहे  
 करलता की धापा, लया में दे रहे

आत्मना के केलने पारिकेश में  
 असुर विचारण है मनुज भागवित में  
 असुरता में भी रहस्य सदा है  
 असुरता जो दानवी सुगार है

दानवी श्रुं संहार का बिगार है  
 दरहस्य चलता हुआ अंगार है

~~222 24th Nov 27~~

अथ- प्रलोभन की विधि है- अद्वितीय  
द्वेष ईर्ष्या की अचलनी विराजितियां  
संसार का अथवा अर्जुन विक्षय है  
अर्जुन को नव अथवा अथ है

હો જરૂર લોપાલુકુઆ હો આફમી  
 હો જરૂર પાગાલુકુઆ હો આફમી  
 ફોર પ્રોન-ચાલેના હો આફમી  
 બો-ચાન આબો-ચાલેના હો આફમી

ਮੁਖਨ ਟੋਮਾ-ਚਾਣਨਾ ਹੈ, ਪਧੁ-ਪਨ ਦੇ  
 ਮੁਖਨ ਟੋਮਾ ਚਾਣਨਾ ਹੈ, ਅਤੁਰ-ਪਨ ਦੇ  
 ਧੁਖਨ ਟੋਮਾ ਚਾਣਨਾ ਹੈ, ਅਗੁਨ-ਪਨ ਦੇ  
 ਮੁਖਨ ਪਨ ਦੇ, ਕੇਵ-ਪਨ ਦੇ, ਫਿਲਾ-ਪਨ ਦੇ

५०६  
१८७२  
३४५६

ਸੁਰਮ-ਲੀਨਾ ਧਰ ਧਰਤੀ ਹੋ ਜਾਏਗੀ  
ਰੀਸ-ਲੀਨਾ ਧਰ ਧਰਤੀ ਹੋ ਜਾਏਗੀ  
ਏਂ ਸੁਰਮਿ ਰਿਸਦਾਰਾ ਏਂ, ਰਿਸਦਾਰਾ ਏਂ  
ੴ ਸਾਧਿਕਾ ਧਰ ਧਰਤੀ ਹੋ ਜਾਏਗੀ

१२-१-८५  
प्रातः ५-३०

39272-212 ✓

342-3727-1079119

De Witt

## \* शुभ कल्पना गीत \*

स्वर्ग होगा इस धरा पर, ऐसी अपनी कल्पना।

शुभ ही होगा इस धरा पर, ऐसी अपनी कल्पना..

वर्षों से अतृप्त जीवन, अर्द्ध जाग्रत ही रहूँ,

जीवन यह जाग्रत ही होगा ऐसी अपनी योजना.

शुभ ----

प्रिय, हित और लाभ तक सीमित अब तक हम रहे,

न्याय, धर्म, सत्य पथ होगा, ऐसी अपनी योजना.

शुभ ----

आस्तित्व में रह आस्तित्वता से सुरक्षा का कर  
निर्वाह,

लक्ष्य स्वराज्य ही होगा ऐसी अपनी  
योजना.

शुभ ----

स्वर्ग ----

## शुभ संकेत गीत

शुभ संकेत मिलें जीवन विद्या से।

शुभ संकेत जीवन विद्या का आगे बढ़ते जाना है.

शुभ संकेत मिला हम सबको, आगे बढ़ते जाना है.

आगे बढ़ते जाना हमको, आगे बढ़ते जाना है ॥

गुरु-शिष्य का नाता यह तो पिता-पुत्र सम्बन्ध जैसा

शुभ प्रयोजन में शिक्षा का हमको बोध कराना

है.

शिक्षा और संस्कार से ही व्यक्ति प्रमाणित

होता है.

शुभ-शिक्षा संस्कार सुलभ हो पथ ऐसा

अपनाना है.

बच्चे ही तो आगे चल विद्या प्रकाश फैलाएंगे

शुभ परम्परा बहे सदा, उत्साहित इन्हें बनाया है,

शुभ संकेत.

## पञ्चदशा

पर्वजों के हैं कुतब हम सभी ।  
प्रेरकों के हैं कुतब हम सभी ॥

हैं रहा आशीर्वचन जिनका सदा ।  
स्वशा रहो, सुख से जियो मिलतु सदा ॥  
आभारी हैं उनके निरन्तर हम सभी ।  
पर्वजों के हैं कुतब हम सभी ॥

उनकी शुभ आकांक्षा से हैं हम सुखी ।  
चाह उनकी थी, यही कि हों हम सुखी ॥  
मखाद इशका कि प्रसन्न हैं हम सभी ।  
पर्वजों के हैं कुतब हम सभी ॥

व्यक्ति से है व्यक्ति का सम्बन्ध बना ।  
विद्या के जो स्रोत उनकी अर्चना ॥  
पूज्यता लें हैं उपस्थित हम सभी ।  
प्रेरकों के हैं कुतब हम सभी ॥



## शुभ लगन जीन

देख कर यह शुभ लगन,  
हम हुए हैं सब प्रसन्न ।

१. अवसर कितनी बार ही,  
हम सबने ऐसा पाया ।  
जाति के अर्थ में ही,  
एक-दुजे का मिलन ॥

२. आधार है परिवार ही तो,  
मानवीय लक्ष्य का ।  
पूर्ण होकर सुख से जीते,  
सब रहे यह घर का आँगन ॥

३. परिवार में ही न्याय मिलता,  
हो सभी को यह विदित ।  
न्याय पूर्ण व्यवहार से ही,  
शान्ति पाता है जीवन ॥

४. परम्परा के अर्थ में ही,  
शरीर भेद है हम है पाते ।  
क्यों ना हम जागृत हो जायें,  
पाया ही है जब ये तन ॥

## वैकल्प जीत

वैकल्प लेना है,

जीवनव्याधी के व्यां अब तो सुख से जीना है।

दाम्पत्य सम्बन्ध को,

वस की व्याधी में स्वीकार करना है ॥

१. जीवन और शरीर और धन ऋणी अर्थ से ।

परस्पर प्रकता का निर्वाह करना है ॥

२. यह सम्बन्ध पावन कितना सुन्दर और सरल है।  
न्याय से सब निश्चित व्यवहार करना है ॥

३. उस व ही जीते सुखवारे, घर-घर में दर आँगन में।

शोकार व्यवस्था करने को ही, धर्म में जीना है ॥

## नव धार गीत

विद्या की नवधार उज्ज्वल बह चली है ।  
विश्वास की नवधार सुज्ज्वल बह चली है ॥

पुष्प उपवन में सुगन्धित खिल उठे हैं ।  
शोभित हुआ संगीत जिससे,  
-गीत गुञ्जित हो उठे हैं ॥  
रंगीत की नवतार सरगम बज चली है ।  
विश्वास की नवधार सुज्ज्वल बह चली है ॥

परिवार में सम्बन्धों का सम्मान हो चला है ।  
मूल्यों के निर्वाह का अब ज्ञान हो चला है ॥  
न्याय की नवधार सुदुल बह चली है ।  
विश्वास की नवधार सुदुल बह चली है ॥

क्यों समझते स्वयं को इस, अस्तित्व में अकेला ?  
सहअस्तित्व ही समाधा, फिर कहाँ कोई अकेला ?  
पूरकता की नवधार निर्मल बह चली है ।  
विश्वास की नवधार निर्मल बह चली है ॥

x . . x . . x . . x . . x

## परम्परा गीत

हैं आने को परम्परा, कि सज रही वसुन्धरा ।  
मिलता है जिसमें सबको सुख, है मानवीय परम्परा ॥

.. सही वही जो भरे और सबके लिए ही ठीक हो ।  
घरती भी बनी रहे उपवन रहे हरा - भरा ॥

जी रहे हैं हम सभी, क्यों और किस लिए ?  
सुखी रहें सदा-सदा, सम्पूर्ण हो किया-घरा ॥

मनुज से क्या मनुज का है, सम्बन्ध समझ ले हर कोई ।  
सुखी करें सभी को हम, आँगन रहे भरा-भरा ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः

एक ही तैरा-भैरा सुख है,  
एक ही तैरा-भैरा वैभव ॥

चाहता हूँ मैं हर फल सुख से जीना, सुख रहना और खिलना ।  
चाहते हो तुम भी तो ये ही, ये ही तैरा-भैरा वैभव ॥

जीवन ही तो सुख है-चाहता, लुविछारें धरिर हिन होतीं ।  
जीवन हूँ मैं, तन है साधन, मानव जग है इसका वैभव ॥

परिवार में सुखी करें सब, इसी अर्थ में रहते हूँ हम ।  
जीवन जग में हम सम्बन्धित, न्याय ही इसका तृप्ति वैभव ॥

झिड़ती, पानी झौर दवा और पेड़-पौधे, जीव-जन्तु सब ।  
प्रकृति हमारी बेसी पुरक, पुरकता ही भैया वैभव ॥

परमेश्वर  
शिव  
विष्णु  
ब्रह्मा  
नमः

## ‘विवाह संस्कार’ गीत

मात-पिता का स्वर्णिम सपना, हो रहा साकार है।  
आशा सबकी पूरी हो, सुख इसका आधार है।।

आशीर्वाद से पूर्वजों के, पाया सुखद प्रसाद है।  
प्रेरकों की प्रेरणा से, सज रहे परिवार हैं।।  
आशा सबकी पूरी हो, सुख इसका आधार है।  
मात-पिता का स्वर्णिम सपना, हो रहा साकार है।।

दृष्टा हैं हम सबही मानव, जागृति के ही अर्थ में।  
कर्म है करना लक्षित हमको, बस इतना ही सार है।।  
आशा सबकी पूरी हो, सुख इसका आधार है।  
मात-पिता का स्वर्णिम सपना, हो रहा साकार है।।

आओ गीत खुशी के गायें, इस पावन शुभ बेला पर।  
देँ आशीष वर-वधु को, हो पूर्ण विवाह संस्कार है।।  
आशा सबकी पूरी हो, सुख इसका आधार है।  
मात-पिता का स्वर्णिम सपना, हो रहा साकार है।।

स्वस्थ रहो और दीर्घायु हों, तेजस्वी, ओजस्वी हों।  
सुन्दर, सुखद हो, समाधान हो, बने सहज परिवार है।।  
आशा सबकी पूरी हो, सुख इसका आधार है।  
मात-पिता का स्वर्णिम सपना, हो रहा साकार है।।

## अस्तिरव

कितना सुन्दर है  
कितना सुरवद है  
अस्तिरव आरा ।

० इसको अमलने है  
शोभित हुआ है  
आन आरा ॥

० चलती हवा है  
बहता है पानी  
सर-सर कल-कल ।

० शुद्ध मिले हमें  
स्वच्छ मिले हमें  
चाहते हैं हर पल ॥

० यह अस्तिरव समझें  
पूरकता समझें

तो स्वस्वद वने सह सुसार आरा ॥

० मिट्टी में उगती हैं  
(सुन्दर) हरियाली फसले  
जाते हैं सुन्दर ।

० मिट्टी उपजाऊ दें  
फसले भी पुष्ट दें  
जाती तब सुन्दर ॥

कितना सरल है  
कितना सहज है  
अस्तिरव आरा ॥

## उत्साह गीत

मेरे साथ चलो,  
सब साथ चलो,  
प्रसन्नता उत्साह के साथ ।  
स्वानुशासन से,  
स्वरज्य तक,  
बढ़ो सभी उत्साह के साथ ॥

सबको ही आगृत होना है ।  
इस बार अवश्य होना है ।  
लेना संकल्प,  
हे हृदय संकल्प,  
बोध पूर्वक उत्साह के साथ ॥

चाहे किसी देश का वासी हो ।  
कोई भी भाषा-भाषी हो ।  
विनिर्म पूर्वक,  
प्रेम पूर्वक,  
चलो-चलो भई साथ-साथ ॥

संग सभी को बैठकर ।  
जीवन विद्या को अभ्यास कर ।  
विश्वास से,  
अपनत्व से,  
परिवार में जीते साथ-साथ ॥

## स्वीकार गीत २...

जीवन ने जीवन को है स्वीकार किया ।

अंग-अंग सुख से जीना है स्वीकार किया ।

१. जिन्मेदारी और ज़म्झ से है जीना ।  
परिवारों ने सुन्दर यह परिवार दिया ॥

२. परिवारों में है भूमिका क्या सबकी ?  
सुख मिलता यदि प्रामाणिक व्यवहार किया ।

३. आहत होकर सुख से जीना है हर-पल ।  
सुन्दर यह अस्तित्व ने उपहार दिया ॥

४. कामना है बेसी, सबकी, लक्ष्य पूर्ण हो ।  
प्रकृति ने सुख-स्रोत सभी को अपार दिया ॥

## रत्नेह गीत

आपु मे हैं जो बड़े और पूर्वजों के रत्नेह से ।  
अज वषे परिवार कितने, प्रेरकों के रत्नेह से ॥

१. है वही परिवार में यह चाह सबकी सब सुरवी हो ।  
जो रहे परिवार सुख से, पूर्वजों के रत्नेह से ॥

२. परिवार कहते हैं उसी को, जिसमें हर व्यक्ति सुरवी हो ।  
आप कदना आ गया है, प्रेरकों के रत्नेह से ॥

३. कामना है सबकी रहती, सुख मिले हमको निरन्तर ।  
हो रही है पूर्ण कामना, पूर्वजों के रत्नेह से ॥